



रजत कुमार गुप्ता

उड़ जा अब तेरी बारी

उड़ने का मौसम है
तो जो जिधर पा-
रहे हैं उधर उड़-
रहा है। चुनावी
सीजन में इस घराने-
से उस घराने तक
उड़ जाने की पुरानी

परंपरा हमारे यहां है। इसलिए खेमा बदल अब भारतीय राजनीति में मायने नहीं रखती। इसके बीच ही कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं जो राजनीतिक तौर पर महत्वपूर्ण नजर नहीं आने के बाद भी समाज पर अपना गहरा असर छोड़ती है। ज्ञानुमो के नेता हेमंत सोरेन अब जेल में हैं वहाँ क्योंकि ईड़ी ने उनके खिलाफ मनी लार्डिंग का केस दर्ज किया है। सच क्या है, यह अदालत को देखना है पर हेमंत सोरेन ने सीएनटी और एसपीटी एक्ट के तहत जो बात कही है, उसे याद रखना होगा। उन्होंने कहा है कि यहां के जमीन के प्रकार में एक जमीन भुईहरी होती है, जिसे किसी भी कानून के तहत बेचा ही नहीं जा सकता है। पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोध कांत ने भी एक बड़ा बयान दिया है कि यह शायद भारतीय इतिहास का पहला केस है, जिसमें सिविल नेचर के केस में कोई मुख्यमंत्री जेल जा रहा है। आम तौर पर जमीन के विवादों का निपटारा कोर्ट में होता है और उसमें किसी को जेल नहीं होता है। उधर राहुल गांधी पाकुड़ होते हुए ज्ञारखंड में कदम रख चुके हैं और उनके आने के बाद रास्ते में पहली बार किसी मुख्यमंत्री ने उनका न सिर्फ स्वागत किया बल्कि उनकी जनसभा में शामिल भी हुए। बिहार में नीतीश कुमार के आने की चर्चा थी पर उससे पहले ही वह खेमा बदल कर गये। लालू और तेजस्वी ईड़ी के समन पर व्यस्त थे। ममता बनर्जी ने कांग्रेस के साथ सीटों का समझौता करने से न सिर्फ इंकार कर दिया है बल्कि कहा है कि कांग्रेस शायद चालीस सीटें भी नहीं जीत पायेंगी। इसलिए राहुल के लिए भी अकेले उड़ने की चुनौती है पर इस चुनौती का भाजपा पर असर है, इससे कोई अब इंकार नहीं कर सकता है। हर जगह राहुल के गुजरते वक्त जो भी ड



कन्त्रित होती है, वह भाजपा को परेशान
मरने वाली है। ऊपर से राहुल गांधी चुन
नकर उन्हीं सवालों को उठा रहे हैं जिनसे
जपा लगातार भागती है।

एसी बात पर हाल की एक चर्चित फ़िल्म मेर
प्रॉम का यह गीत याद आने लगा है। यह
फ़िल्म वर्ष 2014 में रिलीज़ हुई थी। इस गीत
में प्रशंसात इंगोले ने लिखा था और संगीत में
लगाया था शशि सुमन ने। इसे मोहित चौहान ने
पापा स्वर दिया था। गीत के बोल इस तरह

|

परिन्दे यूँ अबके उड़ा कर तू
जला सूरज को जाके आसमान पे तू
परिन्दे भर ऐसी उड़ाने तू
र नजर ये तुझसे पूछे

गग इतनी क्यूँ
ल उड़ा जाके मंजिलों पे यूँ
इन हवाओं से तेरी यारी है

उड़ जा अब तेरी बारी है उड़ जा उड़ जा
उड़ जा अब तेरी बारी है उड़ जा उड़ जा
उड़ जा अब तेरी बारी है
हों में जो भी आये बो बादल बनके

मुश्किलों के उनको बता देना रे
 परे रहना रे जिन्दा दिलों से
 हो अदाज है तेरा बेफिक्र मौज तू
 के अब तेरी मुट्ठी में दुनिया सारी है
 उड़ जा अब तेरी बारी है उड़ जा उड़ जा
 उड़ जा अब तेरी बारी है उड़ जा उड़ जा
 उड़ जा अब तेरी बारी है
 ए परिन्दे यूँ अबके उड़ा कर तू
 जा जला सूरज को जाके आसमान पे तू
 ए परिन्दे भर ऐसी उड़ाने तू
 हर नजर ये तुझसे पूछे
 आग इतनी क्यूँ
 धुल उड़ा जाके मजिलों पे यूँ
 कै इन हवाओं से तेरी बारी है
 उड़ जा अब तेरी बारी है उड़ जा उड़ जा
 उड़ जा अब तेरी बारी
 है उड़ जा उड़ जा
 मुट्ठी में दुनिया सारी है
 उड़ जा अब तेरी बारी
 है उड़ जा उड़ जा उड़ जा अब तेरी बारी है
 उड़ने की बात पर चंडीगढ़ के मेयर का

चुनाव भी याद आ गया। वहां के चुनाव अधिकारी ने यह साबित कर दिया कि अगर इच्छा हो तो कैमरे के सामने भी गड़बड़ी की जा सकती है। अजीब स्थिति यह है कि भाजपा विरोधी मतों को अवैध करार देने के लिए वह खुद उनपर निशान लगाते दिख रहे हैं। अजीब बात यह है कि ऐसा करते वक्त वह कई बार कैमरे की तरफ देख भी रहे हैं।

फिर से विषय को नसीहत देते हुए कहा है कि उन्हें सिर्फ हंगामा नहीं करना चाहिए, क्योंकि जनता यह पसंद नहीं करती है। एक तरह से श्री मोदी की यह बात सच भी है और आम जनता को टीवी पर ऐसे दृश्य जब नजर आते हैं तो उन्हें महसूस होता है कि उनके पैसों की बबार्दी हो रही है। इसलिए भड़या उड़ने का मौसम आ रहा है तो जहां अच्छा लगे और जैसे फायदा हो उसी कायदा में उड़ चलो क्योंकि ठहरे रहने से नेताओं का क्या हाल होता है, इसके उदाहरण तो लालकृष्ण आडवाणी है।

कभी किसी किसान - जवान को भारत रब मिलेगा ! »»व्यंग्य »» प्रकाश सहाय

ग्राम देवता !
नमस्कार !
सोने चांदी
से नहीं किंतु
तुमने मिट्ठी
से किया

प्यार ! हे ग्राम देवता ! नमस्कार !
..बचपन मे किताबों में
पढ़ा.....सिनेमा में ..किस्से
कहानियों में देखा सुना.....गीत
...गानों कविताओं में जाना समझा
कि ..
ये देश है वीर जवानों का अलबेलों
का मस्तानों का ..किसानों
का..खेत खलिहानों का ..
' भारत गावों का देश है ..किसानों
की कर्मभूमि ..खेत खलिहानों की
भूमि अमराई ..बैंसवारी का स्वर्ग
...पगड़डी..पोखर .. पीपल
चौपाल का देश ..

लेकिन आजादी के 77 साल
बाद भी अब तक किसी जवान या
किसान को भारतरत्न नहीं मिला
..विडंबना की पराकाष्ठा है ..
जबकि भारतरत्न की फेहरिस्त
कहानी लंबी है जिसमें कूर्त विदेशी

नाम का निशान तक नहीं है ..
इसके उलट आजादी के बाद जैसे
जैसे भारत
' इंडिया ' में तब्दील होने लगा..
यह तस्वीर धुंधली होती गयी
प्रेमचंद्र की कहानियां बिखर सी
गयी ...
गावों के सन्नाटे के मधुर संगीत
को शहर का कर्कश शौर निगल
गया ..किसान
किताबों ..सिनेमा ..संगीतकविता
किस्से ..कहानियों से बाहर फेंक
दिया गया दुत्कार कर सामाजिक
सीढ़ी की अंतिम पायदान पर जा
टिका किसान। एक वो भी समय ४
जब साहित्यकार जयशंकर प्रसाद
ने ' पुरस्कार ' कहानी में
किसान की गरिमा को एक नयी
उड़ान दी । कहानी में राजा प्रथम
किसान बन कर वहाँमें एक दिन
खेतों में हल जोता था
किसान ग्राम देवता थे ...
कहते हैं धरती शेषनाग के मस्तक
पर टिकी हैविनोबा भावे ने
कहा था कि किसान ही सही मायथ
में शेषनाग है । जिसके कंधे पर
धरती का बोट टिका है ग्राम देवत

परता का बाझी दफ्तर का ह प्रान दफ्तर
का मनोबल आकाश को छूता था
....तभी तो प्रेमचंद्र की कथाओं में

भी जिन्दगी से जूझता था लेकिन कभी आत्महत्या का पाप नहीं किया.. फिर 'इंडिया' के उफनते 'कल्पर' ...में खो गया कि सान मिट गई उसकी यादें। दशकों गुमनामी के बाद अब कि सान अखबार के पन्नों ...टीवी चैनलों के स्क्रीन पर दिखने लगा है दृश्यमें भी गैर किसानों की

किसान को लेकर जिसको जो
राजनीति करनी है करेमुझे
तो खुशी के साथ उम्मीद इस बात
की है कि एक बार फिर अनचाहे
ही... किसान से जुड़ी यादें....
किताबी शब्द....कि स्से
कहनियां...गीत...गाने...कविता
एं जागृत होने लगे हैं.....समाज
को याद आने लगा है कि ' भारत
गावों का देश है ...खेत खलिहानों ..

अंत मे
‘ हे ग्राम देवता ! नमस्कार !’
के कवि रामकुमार वर्मा की किसान
पर अदभूत पंक्तियाँ :
तुम जन मन के अधिनायक हो
तुम हँसो कि फुले- फले देश
आओ सिंहासन पर बैठो
यह राज्य तुम्हारा है अशेष !
ये पंक्तियाँ राजनीतिक गलियारे में
ग्रम हो गई हैं।



आजीवन सदन के सदस्य रहे पर घर नहीं...यूं ही कोई कर्पूरी नहीं बनता

सामाजिक क्रांति के लिए संगठन, संगठन के लिए आर्थिक समृद्धि, राजनीतिक जागृति और चेतना आवश्यक : जन नायक

जननायक 'भारत रत्न' कपूरी ठाकुर ने कहा है 'भले अंग्रेजों ने देश को लुटा, अलबत्ता राजपूत, वैश्य और शूद्र को शिक्षा दिलाने का मार्ग भी प्रशस्त किया।' अंग्रेज नहीं होते तो क्षत्रिय युद्ध, वैश्य व्यवसाय और शूद्र सेवा ही करते रह जाते, वर्योक्ति शूद्रों का शिक्षा प्राप्त करना घोर पाप रहा, तत्कालीन परिवेश में इसलिए सामाजिक क्रांति के लिए संगठन और संगठन के लिए आर्थिक समृद्धि, राजनीतिक जागृति और लोगों में चेतना होनी चाहिए। कपूरी ठाकुर ने भारत के बहुजन समाज को जागृत करने के लिए समाजवाद और साम्यवाद की खिचड़ी बनाने का प्रयास किया। जिसे पसंद तो किया गया, अलबत्ता जातीय आधार सशक्त नहीं होने और आर्थिक आधार नहीं होने से पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सका। उनके फॉमूला को लालू प्रसाद यादव और नीतीश कुमार ने आजमाया और दोनों सफल रहे। ऐसे में कपूरी ठाकुर के विचारों को संयोजने का

का काम न्यू
का काम खु
पिछड़े औ
आरक्षण क
आचार्य नरें
ठाकुर के
भारतीय जन
दिया। कपूर
के सर्वोच्च
के लोग 3
आज भारत
आदिवासी
मुर्मुरा प्रस्तुति
बैटा नरेंद्र मं

किंतु चुनाव में भुगाने किया। पिछड़े, अति गरीब सर्वणि को वकालत करने वाले देव से प्रभावित कपूरी बचार की सार्थकता पार्टी ने चरितार्थ कर गोकुर ने कहा कि देश द पर पिछड़ा समाज ने हैं, उनका सपना चरितार्थ है। दलित समाज की बेटी द्रौपदी और पिछड़ा समाज का पध्यानमंत्री हैं।

ऑस्ट्रिया और वहां भी गए। वहां के रटीटो ने उनकी फैल उपहार में एक कोट उनकी सादगी की प्रेरणा महानता की जब वे मुख्यमंत्री ग्रहण के दौरान, रेडियो पटना से प्रश्न पर पुत्र के मुख्यमंत्री की उत्सुकता में गोकुल ठाकुर ने उपछढ़ दिया, जिसपर जवहरा जमींदार

यूगोस्लाविया
प्रधक्ष मार्शल
कोट देखकर,
टंट किया। यह
ती मिसाल है।
दूसरी मिसाल,
द का शपथ
भॉल इण्डिया
ण को रेडियो
नने की खबर
ढ़ी बना रहे
कतावश कुछ
आंव के पुराने
थप्पड जड
दिया।
तीसरी मिसाल है कि विधान
निकलते समय एक विधायी
उन्होंने जीप माँगा तो विधा
कहा जीप में तेल नहीं है, ३
बार मुख्यमंत्री रहे, एक क
नहीं खुरीद लेते हैं। कपर्ची
अंतिम साँस तक उनका अ
नहीं बना सके, ऐसे महान व
के धनी गुदड़ी के लाल कपर्ची
को को भारत रत की उपाधि
सरकार ने बिहारी जनता व
पूरी करते हुए, उन्हे सम्मान
महान स्वतंत्रता सेनानी f

हुआ। बिहार में उनकी लोकप्रियता और विचारों की उत्कृष्टता के कारण जननायक कहा जाता है। इनके पिता गोकुल ठाकुर गांव के जवराहा नई रहे, जर्मिदारों की सेवा में रहकर उन्हें पढ़ाया। पिता के साथ पारम्परिक पेशा बाल दाढ़ी (हेयर कट) बनाने का काम करते हुए कपूरी ठाकुर ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही प्राप्त किया। उसके बाद उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से स्नातकीय शिक्षा प्राप्त किया। इसी क्रम छात्र जीवन में कपूरी ठाकुर गण्डीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय

की चिंता, उनके लिए चिंतन कर सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने जाने वेता चिंतने से हैं।

वाल नेता विरल होते हैं।
आजीवन उन्होंने परिवारवाद का
प्रतिवाद किया। उनकी निधन के
बाद उनके पुत्र रामनाथ ठाकुर
संकिय गजनीति में आये। उनके

साक्रम राजनात् म अया। उनक
पिता गोकुल ठाकुर अजीवन नाई
का काम करते रहे।
विदित हो कि भारत रत्न से अब तक
कुल 48 महान व्यक्तित्व को
सम्मानित किया जा चुका है। कपूरी

ठाकुर के पूर्व वर्ष 2019 में समाज सेवा के क्षेत्र में नानाजी देशमुख (मरणोपरांत), कला क्षेत्र में डॉ भूपेन हजारिका (मरणोपरांत) और लोक-कार्य के लिए भारत के पर्व

लाक-काव के लिए भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी को भारत रत्न से सम्मानित किया गया। अब कपूरी ठाकुर (मरणोपरांत) भारत रत्न से सम्मानित किए जाने वाले 49 वीं व्यक्तित्व बन गए।
महान स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक, जननायक, राजनीतिज्ञ और कपूरी ठाकुर को भारत रत्न सम्मान कपूरी ठाकुर की जन्म-शताब्दी पर भारत रत्न सम्मान से सामान्य देशवासी हैं।

